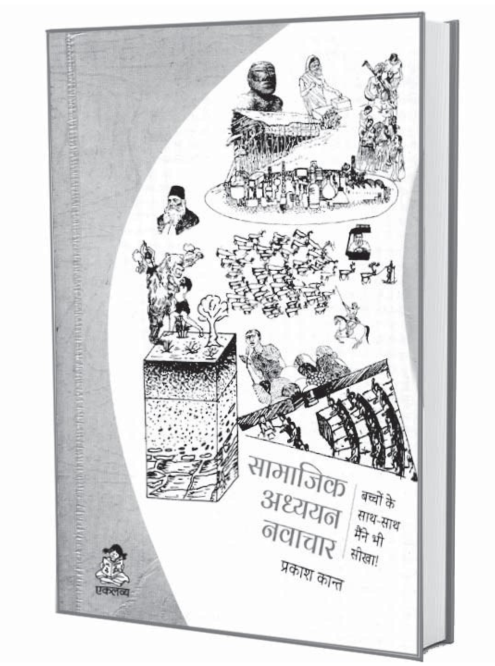
सामाजिक अध्ययन नवाचार
बच्चों के साथ-साथ मैंने भी सीखा

अंजना त्रिवेदी

शिक्षा के क्षेत्र में पिछले चार दशकों से कार्यरत 'एकलव्य संस्था' ने 1983 में 'सामाजिक अध्ययन नवाचार कार्यक्रम' की शुरुआत की। इसके अन्तर्गत माध्यमिक कक्षाओं में सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षण के लिए किताबें विकसित की गईं और शिक्षकों का सतत प्रशिक्षण किया गया। इसी कार्यक्रम से एक शिक्षक के तौर पर जुड़े प्रकाश कान्त ने अपने अनुभवों को एक किताब की शक्ल दी है। बच्चों के साथ सामाजिक अध्ययन जैसे विषय को रोचक और प्रायोगिक तरीक़े से सीखने-सिखाने का यह पठनीय दस्तावेज़ है। *सामाजिक अध्ययन नवाचार : बच्चों के साथ-साथ मैंने भी सीखा* शीर्षक से 2021 में आई इस किताब के विभिन्न पहलुओं पर अंजना त्रिवेदी ने चर्चा की है। सं.



सामाजिक अध्ययन नवाचार
बच्चों के साथ-साथ मैंने भी सीखा
लेखक : प्रकाश कान्त
एकलव्य फ़ाउण्डेशन

यदि शिक्षक को अपने अध्यापन कार्य में रुचि और बच्चों के प्रति प्रेम व फ़िक्र हो तो वह बच्चों को दुनिया की सैर करवाते हुए विषय-अवधारणा में आनन्ददायी गोते लगवा सकता है और विषय के प्रति अटूट प्रेम और खोजबीन की ललक पैदा कर सकता है। शिक्षक के विशेष प्रयास से बच्चे अन्तरिक्ष की रोमांचकारी सैर पर निकल जाते हैं, उनमें समुद्र की गहराइयों को नापने की जिजीविषा पैदा हो सकती है और वे ग्लोब से विश्व की यात्रा भी करने लग सकते हैं।

शिक्षक ही शिक्षा के केन्द्र में होता है। शिक्षक अक्ष है यह समझना ज़रूरी है, क्योंकि तभी शिक्षक अपने चारों ओर बेहतरी के लिए प्रयास कर सकते हैं। सरकारी स्कूल और शिक्षक के बारे में हम सब जानते ही हैं कि सरकारी कार्यों के दबाव, संसाधनों की कमी और बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि और चुनौतियों से शैक्षणिक कार्यों में बाधा आती है। लेकिन जब कभी शिक्षक बच्चों में ऐसी जिज्ञासा और तर्कशीलता पैदा कर दें कि खोजबीन में बच्चों की रातों की नींद ग़ायब हो जाए तब बच्चे अपने गाँव की दशा और दिशा से देश-दुनिया की दशा और दिशा



ज्वार के बदले आम

की समझ बना पाते हैं। एक शिक्षक कैसे अपने स्कूल के वातावरण को बदल सकता है वह 'मानकुण्ड स्कूल' के बच्चों की आँखों में देखा जा सकता था।

एकलव्य फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित *सामाजिक अध्ययन नवाचार* किताब के लेखक प्रकाश कान्त हैं। एक शिक्षक के अपने कैरियर विकास और बनी-बनाई परिपाटियों को तोड़कर नवाचार अपनाते हुए एक जीवन्त और सार्थक कक्षा शिक्षण की तस्वीर पेश करती है यह किताब।

किताब के आमुख में रश्मि पालीवाल लिखती हैं कि एकलव्य के 'सामाजिक अध्ययन नवाचार कार्यक्रम' में प्रकाश कान्त को शिक्षकों की शिक्षा और बच्चों की शिक्षा, दोनों में निहित अलोकतांत्रिक परिपाटियों का पुनरावलोकन करने का मौक़ा मिला। प्रकाश बताते हैं कि कैसे एक शिक्षक के नाते वे महसूस कर पाए कि उन परिपाटियों की जकड़न से हटा जा सकता है, जीवन्त और सक्रिय हुआ जा सकता है। "नवाचार को लागू करने का अर्थ यह नहीं होता है कि शिक्षक एक समान रूप से तय विधियों को ठीक तरह से क्रियान्वित कर दे, बल्कि यह होता है कि एक विचारशीलकर्ता के तौर पर वो अपने उद्देश्यों को तय करे, अपने छात्रों की समझ का पता लगाए, बच्चों की मदद के रास्ते खोजे, उन तरीक़ों को आज़माकर देखे, व्यवहारिक कठिनाइयों का सामना करे, उनसे पार पाए।" रश्मिजी आमुख में आगे लिखती हैं, "लिखना सम्प्रेषण करना होता है, बता देना नहीं– इस तथ्य की कई ख़ूबसूरत अभिव्यक्तियाँ किताब में जगह-जगह पढ़ने को मिल जाती हैं।"

कई बार किताब पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि शिक्षक कई सत्रों में सामाजिक अध्ययन के कौशलों को विकसित करने के लिए सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं। उनकी पैनी नज़र से बच्चे किसी विषय-वस्तु को कैसे समझ सकते हैं, इसके लिए कई तरह के प्रयास करते हैं। माध्यमिक स्कूल के शिक्षक बच्चों के साथ कितने स्तरों पर कार्य और मूल्यांकन करते हैं, इसके कई सारे उदाहरण प्रकाशजी अपनी पुस्तक में रखते हैं।

सामाजिक अध्ययन नवाचार किताब 19 अध्यायों में है। हर अध्याय में लेखक एक अवधारणा को खोलते चलते हैं। वह किताब में बहुत ही सुन्दर तरीक़े से बयान करते हैं कि कभी-कभी कैसे किसी विषय की एक अवधारणा

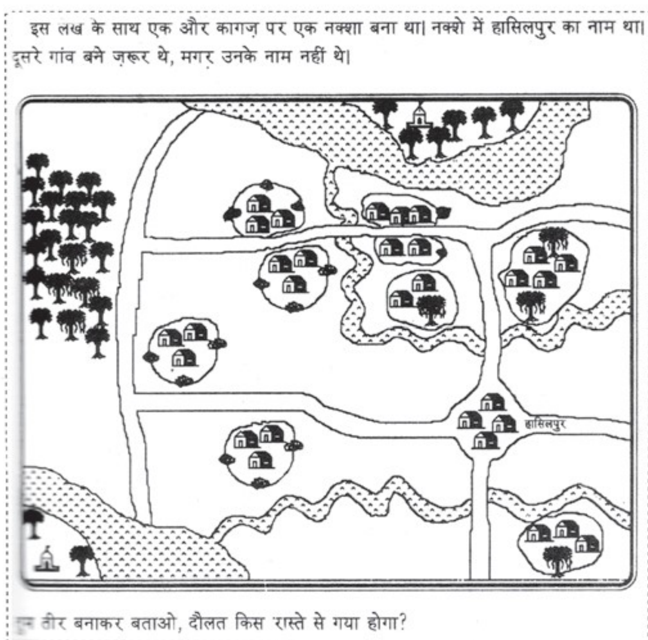
को खोलने के प्रयास में दूसरी अवधारणा पर टिक कर काम करना पड़ता है, बिना इस भय के कि कक्षा का समय समाप्त हो रहा है या फिर परीक्षा में तो यह दो नम्बर का ही प्रश्न आने वाला है। लेखक इस किताब में शिक्षा और परीक्षा के सवाल पर कई सारी मान्यताओं को तोड़ते हैं और बच्चों की कामचलाऊ पढ़ाई के ख़िलाफ़ जाते हुए बच्चों की अवधारणा पर ठोस काम करने के जीवन्त कक्षाओं के विस्तृत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वे कहते हैं कि ठोस और गम्भीर काम का ही नतीजा होता है कि बच्चे इस विषय को माध्यमिक कक्षाओं के बाद भी आगे पढ़ते हैं, और पढ़ना चाहते हैं।

प्रकाश कान्त अपनी इस किताब में लिखते हैं, ''एकलव्य द्वारा प्रकाशित सामाजिक अध्ययन नवाचार की पुस्तकों के कई पाठ मुझे इस बात की गुंजाइश देते थे कि मैं बच्चों को उनके आज के सवालों-समस्याओं से जोड़ूँ, उनपर बात करूँ। इस सिलसिले में मैंने पाया कि सिंचाई एक बड़ा मुद्दा है। कक्षा 7 के लिए बनी किताब में 'हरित क्रान्ति' से सम्बन्धित पाठ ने इस मुद्दे पर बात करने की गुंजाइश दी। एक अहम प्रश्न यह था कि इस क्रान्ति से असल फ़ायदा किसे हुआ। यह 'ग़रीबी' वाले पाठ से भी जुड़ता था। कक्षा के बहुत सारे बच्चे भूमिहीन या छोटी जोत के किसान परिवार से थे। उनके अनुभव और उनकी बातें कक्षा के लिए असल बातें थीं। ख़ास चीज़ यह रही कि बच्चे इस बात को समझ पाए। उनके भीतर छठी कक्षा में पढ़े 'किसान और मज़दूर' पाठ के गंगू जैसे छोटे, रामू जैसे मझोले और हरनारायण जैसे बड़े किसान का सन्दर्भ था। बस कड़ियाँ जोड़ने की ज़रूरत थी।''

जाति के सवाल पर शिक्षक का असहज होना आज भी इस विषय को कक्षा में बेहतर तरीक़े से खोलने और पढ़ाने में बाधक बनता है। समाजशास्त्री और सामाजिक अध्ययन पुस्तकों के लेखक सी एन सुब्रह्मण्यम (सुब्बू) जैसे लोगों के तर्क का हवाला देते हुए लेखक कहते हैं, ''बच्चे जब तक समस्या को ठीक से जानेंगे और समझेंगे नहीं– तब तक उसे ख़त्म करने के लिए कैसे तैयार हो पाएँगे।''

सामाजिक अध्ययन नवाचार किताब के हर पृष्ठ पर शिक्षक के द्वारा स्कूल में की गई मेहनत का रंग, बच्चों की आँखों में पढ़ने की लालसा, और पालक की नज़रों में शिक्षक के प्रति सम्मान दिखाई देता है।

सामाजिक विज्ञान विषय तब और महत्त्वपूर्ण हो जाता है जब वह हमारे रोज़ाना के जीवन से ताल्लुक रखता हो। लेखक के अनुसार, ''पाठ्यक्रम में यह विषय विराट स्तर पर एक समावेशी विषय होता है। इस विषय को सामान्य तरीक़े से पढ़ाना आसान है किन्तु बच्चा रुचि ले और इस विषय के प्रति आकर्षित हो, इसके लिए कई तरह की क़वायद करनी होती है। 'नक़्शे और पैमाने– आओ मानचित्र बनाएँ' अध्याय में



कक्षा छठीं के भूगोल खण्ड के पाठ "दिशाएँ" का एक पन्ना

दिए गए मानचित्र की ही तरह तय किया गया कि माचिस की एक तीली को एक स्केल के बराबर मानकर हर समूह नक़्शा बनाएगा। अगर कमरे की लम्बाई 15 फ़ीट है तो 15 तीलियाँ और चौड़ाई 10 फ़ीट है तो 10 तीलियाँ रखी जानी हैं। लेकिन दिक़्क़त भी थी। कक्षा बड़ी थी। क़रीबन 70 बच्चों की। इनमें छात्राएँ ही 25 के आसपास थीं। तक़रीबन 16-17 समूह बने थे। मानचित्र कक्षा के फ़र्श पर नहीं बन सकते थे, इसके लिए सारे समूहों को स्कूल के मैदान में ले जाना पड़ा। मानचित्र बनाने में दूसरी दिक़्क़त हवा की आ रही थी। तीलियाँ उड़ी जा रही थीं। मैदान भी समतल न था। जैसे-तैसे नक़्शे



कक्षा सातवीं के नागरिकशास्त्र खण्ड के पाठ "उद्योग" से लिया गया एक चित्र

ठीक-ठाक बन ही गए। बच्चे इतना जान गए कि किसी निश्चित आधार पर बड़ी चीज़ को छोटा करके कैसे बनाया जा सकता है।"

शिक्षक लिखते हैं, "मैंने बार-बार पैमाने सम्बन्धी गतिविधि तो करवाई ही, इसके अलावा मासिक टेस्ट, तिमाही, छ:माही और वार्षिक परीक्षाओं में पैमाने सम्बन्धी प्रश्न कई तरह से पूछे– जितनी ज़्यादा तरह से पूछे जा सकते थे, उतने अलग तरीक़ों से अलग-अलग नाप और पैमाने देकर उनसे अलग-अलग तरह के कमरों के मानचित्र बनवाए– दो दरवाजे वाले, आमने-सामने दरवाज़े वाले, उत्तर-दक्षिण लम्बाई वाले, पूर्व-पश्चिम वाले। इन सबका लाभ भी हुआ। बच्चे न सिर्फ़ मानचित्र पढ़ना बल्कि बनाना भी काफ़ी हद तक सीख पाए।"

कक्षा में इस तरह के कामों से बच्चों की अवधारणा इतनी मज़बूत हो जाती है कि बच्चे उसे कभी नहीं भूल सकते।

किताब में दिखतीं शिक्षक की उलझनें

शिक्षक अपने अनुभव के आधार पर लिखते हैं कि पृथ्वी ही नहीं, चाँद, सूरज वग़ैरह भी गोल हैं। चाँद और सूरज तक तो बात ठीक है किन्तु पृथ्वी गोल है यह बात बच्चे नहीं समझ पाते हैं। पृथ्वी के गोल होने की बात बच्चों को जमती नहीं है। लेखक इसको एक उदाहरण से बताते हैं कि मैंने ग्लोब की तरह पृथ्वी के भी गोल होने की बात कही। बच्चे आपस में बुदबुदाने लगे, उनके चेहरे के भाव शिक्षक ने पढ़ते ही ग्लोब और नक़्शे से समझाने का प्रयास किया। मुश्किल अवधारणा को सरलीकृत या आसान बनाना सम्भव नहीं हो पाता है। ऐसे में आवश्यक है दिक़्क़तों के हल तलाशना।"

हल तब तक तलाशना जब तक बच्चों के चेहरे पर सन्तुष्टि के भाव नहीं आ जाएँ। खेत समतल हैं, तो हम जहाँ रहते हैं वह गोल कैसे हो सकती है? पृथ्वी किसपर टिकी है? ऐसे अनेक प्रश्न तभी बच्चों के मन में आते हैं जब अवधारणाओं को समझाने का प्रयास किया जाए। तभी बच्चे आपके और नज़दीक आकर पूछ सकने की हिम्मत कर सकते हैं, "तमारे कैसे मालम मास्साब?" (तुम्हें कैसे पता मास्टर साब?)। बच्चों के ऐसे प्रश्नों के माध्यम से कक्षा में शिक्षक का सत्ता वर्चस्व भी टूटता है और शिक्षक एवं विद्यार्थी के बीच सीखने की दूरी भी ख़त्म होती है।

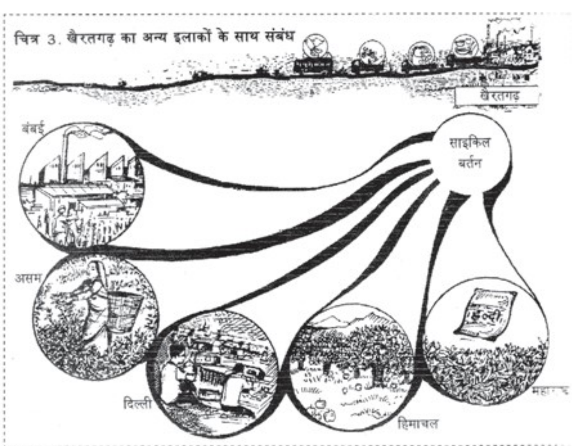
ग्लोब को तो हम घुमाते हैं, पृथ्वी को कौन घुमाता है? पृथ्वी घूमती क्यों है? पूर्व से पश्चिम क्यों नहीं घूमती? पृथ्वी कब तक घूमेगी? कब से घूम रही है? बच्चों के ऐसे सवाल शिक्षक के पसीने छुड़वा सकते हैं यदि पढ़ाई प्रकाश कान्त की कक्षा जैसी हो तो। बच्चे इन सवालों तक तभी पहुँच सकते हैं जब उनके सामने शिक्षक एक अवधारणा पर गहराई से चर्चा कर रहा हो।

आमतौर पर सामाजिक अध्ययन के शिक्षक इतने सारे बिन्दुओं पर चर्चा करते ही नहीं हैं। पिछले दस सालों से स्कूल विज़िट में देखती हूँ कि शिक्षक यह कहकर पल्ला झाड़ देते हैं कि यह अवधारणा तो आगे की कक्षाओं का मामला है। अभी तुम्हारी उम्र नहीं है यह सब समझने की। अभी काम की विषयवस्तु को पढ़ लो। सवाल ख़ूब करते हो। मैंने महसूस किया है कि सामाजिक अध्ययन के शिक्षक भी पृथ्वी की उत्पत्ति पर सवाल करने पर इसे भगवान की देन बताकर पल्ला झाड़ लेते हैं। प्रकाश कान्त ने अपनी कक्षा में सौरमण्डल से अपनी छोटी-सी शुरुआत की। ग्रहों-उपग्रहों की उत्पत्ति और ग्रहों के सूर्य का चक्कर लगाने के बारे में बताया। बच्चों ने अपनी पिछली क्लास में नील आर्मस्ट्रांग के चन्द्रमा पर उतरने और वहाँ से चित्र भेजने के बारे में पढ़ा था, उनकी याद दिलाई।

शिक्षक का बच्चों के स्तर पर जाकर समझाना प्रकाश सर ही कर सकते हैं। पृथ्वी की उम्र 454 करोड़ वर्ष है या सौरमण्डल का उद्भव क़रीब 46 हजार लाख वर्ष पहले हुआ था, यह सुनकर उनके दिमाग़ में इतनी लम्बी समयावधि का चित्र स्पष्ट नहीं होता। इसी प्रकार, ग्रहों की आपसी और सूर्य से उनकी अलग-अलग दूरियाँ तो उनकी कल्पना से ही बाहर हैं। ऐसी तकनीकी स्थिति में शिक्षक ने अपने स्तर पर रास्ते निकालते हुए लिखा है, "सौर परिवार के चित्र में ग्रहों की सूर्य और एक दूसरे से दूरियों को पास, ज़्यादा पास, दूर, ज़्यादा दूर वग़ैरह जैसी शब्दावली में सीमित कर समझ लेते हैं। मुझे लगता है, इस स्तर पर बच्चों से ज़्यादा उम्मीद नहीं की जानी चाहिए। संख्याएँ अपनी जगह। यूँ भी, समय या दूरी के मामले में संख्याओं के स्थूल बोध तक सीमित रहकर भी उनका काम चल जाता है।"

'देसी ट्रेसिंग पद्धति' अध्याय में लेखक लिखते हैं, "यह तरीक़ा ट्रेसिंग पेपर की मदद से ट्रेस करने या ट्रेसिंग टेबल पर ट्रेस करने से अलग था। और ग्रामीण बच्चों के लिहाज़ से आसान और सस्ता भी! कपास के फ़ाहे या कपड़े के छोटे-से टुकड़े पर घासलेट (मिट्टी का तेल या केरोसिन) डाला। इससे काग़ज़ पारदर्शी हो जाता और नक़्शे या चित्र पर रखकर पेन्सिल से ट्रेस कर लिया जाता।"

'अँधेरे-उजले गलियारे, सुरंगें और तहख़ाने और उनसे गुज़रते बच्चे' इतिहास के इस अध्याय में प्रकाश लिखते हैं, "इतिहास शुरू से ही राजसत्ता-केन्द्रित रहा। जन की सत्ता, जन की भूमिका उससे बेदख़ल रही। राजा, उसका ख़ानदान, वंश, यश, जय-पराजय और कामकाज, यही इतिहास था। कभी जानने की कोशिश ही नहीं की गई कि उस समय के साधारण लोग क्या-क्या कर रहे थे? इतिहास लेखन के इस जनविरोधी



कक्षा छठवीं के नागरिकशास्त्र के पाठ "एक दूसरे पर निर्भर" का एक चित्र

रवैए से बौद्धिक वर्ग को काफ़ी शिकायत रही। मुझे ख़ुद लगता था कि इतिहास इस तरह से क्यों नहीं लिखा जाना चाहिए कि अलग-अलग समय में लोग किस तरह से रहते थे, उनका सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन कैसा था, उनकी सोच और व्यवहार में किस प्रकार के परिवर्तन आते थे?"

इस किताब में अपनी असहमति को दर्ज करते हुए प्रकाश लिखते हैं, "भारतीय इतिहास को हमेशा उत्तर की तरफ़ से देखा जाना ठीक नहीं रहा। भले ही शुरुआत में और काफ़ी लम्बे समय तक राजनीतिक घटनाओं का केन्द्र मुख्यतः उत्तर भारत रहा लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि दक्षिण और उत्तर-पूर्व में कुछ हो ही नहीं रहा था, और जो कुछ भी हो रहा था वह सिर्फ़ उत्तर में ही!"



कक्षा आठवीं के इतिहास खण्ड के पाठ "अँग्रेज़ शासन में उद्योग और मज़दूर" से लिया गया एक चित्र

'पुरानी चीज़ों, किताबों और इमारतों से आतीं इतिहास की आवाज़ें' अध्याय में प्रकाश लिखते हैं कि इसके तहत कराए गए एक प्रोजेक्ट कार्य के दौरान बच्चे अपने घरों की चीज़ों को किस प्रकार खोजकर लेकर आए। "सर, म्हारे घरे पुरानी पेटी में किताब थी!" एक बच्ची ने किताब देते हुए कहा। वह 1956 की छपी हुई हिन्दी की किताब थी। एक पाठ में लिखा था, "नाना ने नानी को खींचा। नानी ने मुनिया को खींचा। मूली ज़मीन से बाहर आ गई..."

"50-60 साल पहले लोग अपनी दूसरी-तीसरी की पाठ्यपुस्तकों में क्या पढ़ते थे, चित्रों से पता चल सकता है कि वे कपड़े हमारे जैसे ही पहनते थे या दूसरी तरह के, लेन-देन के लिए जो पैसे इस्तेमाल होते थे वे अभी जैसे थे या अलग तरह के, वग़ैरह।"

बच्चों ने किस तरह से अपने गाँव मानकुण्ड का इतिहास पता किया : चूँकि शिक्षक यहाँ के स्थाई निवासी नहीं थे इसलिए उन्होंने वहाँ के प्रधानाचार्य और भृत्य से इस गाँव के इतिहास की जो जानकारी बच्चे लेकर आए, उसके प्रमाण जानने का प्रयास किया।

'बच्चे बतौर भावी नागरिक और नागरिक शास्त्र' पाठ में शिक्षक ने अपनी कक्षा में किए गए नवाचारों का उल्लेख करते हुए लिखा कि बच्चों से छोटा-मोटा मैदानी कार्य करवाते हुए, गाँव के सरपंच को बुलाकर उनसे कक्षा में बच्चों की बातचीत करवाई गई। इतिहास के पाठों से गुज़रते हुए बच्चों ने इतना तो जान लिया था कि मनुष्य ने शिकार युग से लेकर आज तक जो कुछ भी हासिल किया है, वह सामूहिक प्रयासों से ही किया गया है। आज सामूहिकता की वैसी ज़रूरत भले न महसूस होती हो लेकिन परस्पर निर्भरता की तो रहती ही है। बैंक के लोगों के साथ सम्बन्ध पर बातचीत की गई। बैंक खाते कितने प्रकार के होते हैं, पैसे कितनी तरह से जमा किए जा सकते हैं, कितनी तरह का ब्याज मिलता है, बैंक ऋण की अदायगी किस तरह से की जाती है, आदि।

'ग़रीबी और रहमान के फ़कीर पिता का सवाल' अध्याय भी काफ़ी दिलचस्प है। मैंने कक्षा की शुरुआत इसी पाठ से की तब मेरी नज़र अचानक रहमान पर चली गई थी। रहमान के पिता फ़कीर थे। ग़रीबी रेखा के नीचे के परिवारों

का सर्वे करते समय निर्धारित मानकों के कारण उनका परिवार हम शिक्षकों द्वारा ग़रीबी रेखा के ऊपर बता दिया गया था। और कुछ लोगों के साथ भी ऐसा हुआ था जो बिना किसी सर्वे के वैसे ही न केवल ग़रीब लगते थे बल्कि थे ही, लेकिन सर्वे में ग़रीब नहीं रह गए थे। तहसील कार्यालय से प्रमाणित होकर आने के बाद जब पंचायत में ग़रीबी रेखा के नीचे आने वाले परिवारों की सूची जारी हुई थी तब सूची के नाम देखकर लोगों में नाराज़गी फैल गई थी।

इस नाराज़गी की वजह से परिवार के लोग स्कूल आ गए। रहमान के पिता ने पूछा, "माड़ सा'ब, सही-सही बताना क्या मैं आपको अमीर लगता हूँ!" उनकी फ़कीर आँखों में निरीहता और कातरता थी।

शिक्षक लिखते हैं, "यह सारा उलटफेर उस साल ग़रीबी पता करने की पद्धति बदल दिए जाने से हुआ था। इसके पहले जब भी इस तरह के सर्वे हुए थे उनमें परिवारों की माली हालत, आमदनी, ख़र्च इत्यादि के आधार पर ग़रीबी का निर्धारण होता था। कुछ कॉलम अतिरिक्त रूप से जोड़े गए थे। ख़ासकर ख़र्चे के। जैसे– महीने में कितना तेल लगता है, कितना आटा-दाल, चाय-शक्कर, इलाज पर कितना ख़र्चा, इस तरह के दीगर ख़र्च। ज़ाहिर है, ज़्यादातर लोगों द्वारा ख़र्चा बहुत ज़्यादा बताया गया, आमदनी कम।" वैसे स्कूली किताब और पाठ्यक्रम में छोटे बच्चों को किसी सरकारी योजना या कार्यक्रम की सिर्फ़ सैद्धान्तिक जानकारी दी जाए, नकारात्मक पक्षों की बात न की जाए! लेकिन इन पुस्तकों में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों की बात इस मंशा से कही गई कि बच्चों में स्वस्थ एवं सन्तुलित आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके और वे अपने आसपास की चीज़ों पर नज़र रखना सीख सकें।

प्रकाश कहते हैं कि सामाजिक अध्ययन के नवाचार भले ही बन्द हो गए हों किन्तु नवाचार के माध्यम से विषय की अवधारणाओं को समझने और बच्चों को समझाने के प्रयोग मील के पत्थर साबित हुए हैं।

प्रकाश कान्त की यह किताब उनके तीन दशकों के स्कूली शिक्षण अनुभवों की डायरी है। यह डायरी उन सबके लिए उपयोगी है जो इस विषय को बहुत आसान, अनुपयोगी विषय समझते हैं और यह धारणा रखते हैं कि इसमें तो कभी कोई फ़ेल हो ही नहीं सकता फिर क्यों इतनी मेहनत करना। पर अच्छी शिक्षा में विषय से लगाव बनाने और उसकी पड़ताल करने का रास्ता कितनी क़वायदों से गुज़रता है, यह किताब पढ़कर समझ आता है।

अफ़सोस है कि हमारे राज्य में ऐसे स्कूल कम ही मिलेंगे, जहाँ सामाजिक अध्ययन विषय के कौशलों– तर्कशीलता, विश्लेषणात्मक पहल, आलोचनात्मक चिन्तन, अभिव्यक्ति के मौक़े और प्रश्न पूछने की आज़ादी दी जाए।

यह किताब सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों व शोधार्थियों के लिए एक अमूल्य दस्तावेज़ है।

अंजना त्रिवेदी विगत ढाई दशकों से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ ही पत्र-पत्रिकाओं के लिए सतत लेखन रहा है। महिला स्वास्थ्य, शिक्षा एवं नागरिक अधिकार इनके प्रमुख विषय रहे हैं। अंजना ने पिछले दस सालों तक अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, भोपाल, मध्यप्रदेश में सामाजिक विज्ञान स्रोत व्यक्ति के रूप में काम किया है। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से बतौर सलाहकर कार्य कर रही हैं।

सम्पर्क : trivedi20anjana@gmail.com